निर्विचार अवस्था में होता हैं पूर्वजन्म ज्ञान

–आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 22 अगस्त 09।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि विचारों की दूनियां में रहते हुए सम्पूर्ण सत्य को नहीं पाया जा सकता। सम्पूर्ण सत्य की प्राप्ति के लिए निर्विचार अवस्था में जाना होता है और उस अवस्था में जानें पर ही अपने पूर्वजन्म को जाना जा सकता है।

उक्त विचार उन्होंने पर्युशण आराधना महा-िविर के दौरान जैन वि-व भारती स्थित सुधर्मा सभा में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा।

उन्होंने कहा कि किसी भी साधु को एक ही जन्म में सिद्ध मिलनी दुर्लभ है। उसको उनेक जन्मों तक साधना करनी होती है। उन्होने कहा सब मोक्ष की बात करते हैं, मैं मोक्ष की बात नहीं कहता। सबसे पहले जरूरी है वर्तमान को सुधारना। जब वर्तमान सुन्दर होगा तब भविश्य अपने आप उज्जवल होगा। उन्होने कहा कि परिग्रह से ममत्व नही छटेगा तब तक न सत्य को प्राप्त कर सकते है और न मोक्ष की तरफ ले जाने वाले रास्ते पर बढ सकते हैं। संयम का रास्ता, मुनि का रास्ता बहुत लम्बा होता है उसको पार करने के लिए धर्म की जरूरत होती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि :ारीरिक दुःख से ज्यादा मानसिक दुःख कश्ट दायिक होता है। मानसिक दुःख ही :ारीरिक दुःख का संवेदन, अहसास करवाता है। उन्होंने कहा कि मन को अमन बनाने की साधना करने से सफलता मिलती है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि कर्म निर्जरा की दृश्टि से जप का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। आत्मशुद्धि के लिए किया गया जप सार्थक है, किन्तु जो दुसरों को हानि पहुंचाने के लिए जप किया जाता है वह जधन्य है, तान्य है। उन्होंने कहा कि जप पर अनुसंधान होना चाहिए। मेरी कृत्रि अनुसंधान के बाद वस्तुस्थिति जो होती है उसे स्वीकार करने की रहती है। उन्होंने कहा कि जप से सारे कश्ट, विघ्न बाधाएं दूर होती है यह :ोद्ध का विशय है। युवाचार्यश्री ने भगवान महावीर के पूर्वजन्मों पर प्रका-ा डाला।

इस अवसर पर साध्वी आरोग्यश्री ने जप के महत्व पर प्रका-ा डालते हुए कहा कि जयाचार्य सिद्धयोगी थे, जिन्होंने ऐसे अनेक मंत्रों का निर्माण किया जो मंत्र :ाक्ति-ाली हैं। मंत्र जप से निकलने वाले प्रकंपन ने केवल बाहरी वातावरण को प्रभावित करते है बल्कि भाव जगत को भी प्रभावित करते है। मुनि जितेन्द्र कुमार ने भगवान पा-र्वनाथ के जीवन चरित्र पर प्रका-ा डाला। मुनि राजकुमार ने गीत की प्रस्तुति दी। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।